ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं के आहार सम्बन्धी बीमारियॉः लक्षण, कारण एवं निवारण

डा0 संजय कुमार मिश्र[1] एवं डा0 राकेश कुमार[2]

[1]उपनिदेशक (पशुधन विकास) पशुपालन निदेशालय उ0प्र0 लखनऊ।

[2]उपमुख्य पशु चिकित्साधिकारी, सीतापुर।

पशुओं का स्वास्थ्य सीधे उनके आहार पर निर्भर करता है। यदि आहार संतुलित, स्वच्छ और पर्याप्त न हो तो कई प्रकार की पोषण एवं चपायचय बीमारियां उत्पन्न हो जाती है।

1-कुपोषण

कारणः

- पशु को आवश्यक पोषक तत्वों (प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज, विटामिन) की कमी वाला चारा देना।
- केवल भूसा या सूखा चारा खिलाना। हरे चारे व दाने की कमी।

लक्षणः

- कमजोर शरीर, वजन घटना, बाल रूखे होना।
- दुग्ध उत्पादन कम होना। रोग प्रतिरोधक क्षमता घट जाना।च्

निवारणः-

- संतुलित आहार, हरा चारा, भूसा, दाना, खनिज मिश्रण देना।
- नियमित खनिज मिश्रण एवं नमक चटाना।
- मौसमी हरा चारा एवं फसल अवशेषों का सही उपयोग।

2-एसीडोसिस

कारणः

- अधिक मात्रा में अनाज (मक्का, जौ, चोकर) खिलाना।

3-कीटोसिसः

कारणः

- कार्बोहाइडेªट एवं बसा की कमी। विशेषकर अधिक दूध देने वाली गाय/भैंस में।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- दुग्धारम्भ (ब्यात के बाद) अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होने पर ऊर्जा की कमी होना। ऊर्जा की तुलना में प्रोटीन व वसा का असंतुलन, उच्च उत्पादक पशुओं को पर्याप्त अनाज/ऊर्जा न देना।

लक्षणः

- दूध उत्पादन अचानक कम होना।
- भूख न लगना विशेषकर दाने की।
- श्वास और दूध में एसीटोन जैसी गंध।

निवारणः

- दाने में ऊर्जा का स्रोत (मक्का, गुड, जौ, खली) देना।
- प्रोपाइलीन ग्लाइकाल या ग्लूकोज ड्रिप देना।
- खनिज मिश्रण में कोबाल्ट व विटामिन बी12 शामिल करना।
- रफेज (भूसा, हरा चारा) की कमी। असंतुलित दाना चारा अनुपात।

लक्षणः

- भूख कम लगना, जुगाली बन्द होना, दस्त या मल में अम्लीय गंध।
- खडे होने में कठिनाई, पैरो में सूजन।

निवारणः

- आहार में रफेज 60-70 प्रतिशत अवश्य रखें।
- दाने को धीरे-धीरे बढ़ाकर खिलाना।
- सोडियम बाई कार्वोनेट (बेकिंग सोडा) मिलाकर खिलाना।

4-हाइपोकैल्सीमिया/मिल्क फीवर

कारणः

- कैल्शियमः- फास्फोरस का असंतुलन एवं विटामिन डी की कमी ।
- दुग्धारम्भ के समय शरीर में कैल्शियम की कमी या बंःच् का असंतुलन।
- गर्भावस्था के दौरान अत्यधिक कैल्शियम देना । चूना पत्थर पाउडर/डाई कैल्शियम फास्फेट । धूप में पर्याप्त समय तक पशु को न रखना।

लक्षणः

- बच्चा देने के बाद उठ न पाना।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- मासपेशियों में कमजोरी, कंपकपी एवं चेतना कम होना।

निवारणः

- गर्भावस्था के अंतिम महीने में संतुलित खनिज मिश्रण देना।
- बच्चा देने के तुरन्त बाद कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट, इंजेक्शन ।

5.अफारा/पेट फूलना/ब्लोट

कारणः

- अत्याधिक हरा चारा (बरसीम, लोबिया, अल्फा, अल्फा बिना मिलावट के) एक साथ खिलाना।
- गीला या किण्वित चारा खिलाना, ।
- रूमेन की सामान्य गैस बाहर न निकलना।

लक्षणः-

- बॉया पेट फूल जाना, सांस लेने में कठिनाई ।
- पशु का बार-बार करवट बदलना, बैचैनी, मृत्यु।

निवारणः

- चारे को सूखा व हरा चारा मिलाकर खिलाना।
- हरे चारे को खिलाने से पहले थोडी देर सुखाना।
- अफारा होने पर तेल या फोमनाशक दवा देना (साइमेथिकोन)
- गम्भीर स्थिति में पशु चिकित्सक द्वारा ट्रोकार लगाना।

6- खनिज विटामिन की कमी संबंधी रोगः

- कैल्शियम की कमी- दुग्ध ज्वर, कमजोर हड्डी, रिकेटस, ओस्टीयोमेलेसिया।
- फास्फोरस की कमी- पाइका रोग (मिट्टी लकड़ी, कपड़ा, चमड़ा चबाना)
- कॉपर की कमी- बाल झड़ना, प्रजनन समस्या।
- आयोडीन की कमी- गन्डमाला/घेंघा ळवपजमतण्
- विटामिन ए की कमी- रतौंधी बॉझपन प्रजनन में समस्या।
- विटामिन डी की कमी- हड्डियॉ, टेढ़ी होना, कमजोर होना।

निराकरणः-

- संतुलित मिनरल मिक्सचर व विटामिन सप्लीमेन्ट नियमित दें।
- पशुओं को धूप में चराना

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- दाने में आयलसीड, हरा चारा, गाजर हरी पत्तियां सम्मिलित करना।

7- माइकोटॉक्सिकोसिसः-

कारणः

- फफूद लगे दाने या भूसे का सेवन, । खराब भंडारण।

लक्षणः-

- भूख कम होना, दस्त, दूध उत्पादन घटना, गर्भपात या प्रजनन असफलता।

निवारणः

- सूखा व साफ चारा ही उपयोग करें।
- फफूँद लगे दाने/भूसे को तुरन्त हटाए।
- ट्राक्सिन बाइन्डर जैसे एक्टीवेटेड चारकाल, बेन्टोनाइट, पशु चिकित्सक की सलाह से खिलाए।

8- अत्याधिक प्रोटीन या यूरिया विषाक्तता- से अफरा

कारणः-

- आहार में अधिक यूरिया/ कंस्ट्रेट देना।
- निवारणः संतुलित आहार देना, आहार में अचानक बदलाव न करें।
- यूरिया को सुरक्षित मात्रा (1%) से कम में ही प्रयोग करें।

9-प्रोटीन की कमीः-

कारणः

- हरे चारे की कमी, सूखा चारा ही अधिक देना।

लक्षणः

- बढवार रूकना, दुग्ध उत्पादन में कमी, शरीर दुबला/कमजोर होना।

निवारणः

- हरे चारे व दालो की भूसी का समुचित प्रयोग।
- तेल खली, चना, मूंगफली खल आदि, प्रोटीन स्रोतो का आहार में समावेश।

10- मोटापा और फैटी लिवर प्रजनन में समस्या, कम दुग्ध उत्पादन।

कारणः-

- ऊर्जा या अनाज आधारित आहार की अधिकता, व्यायाम की कमी।

निवारणः

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- संतुलित आहार एवं पर्याप्त हरा चारा।
- पशुओं को चरने या चलने फिरने का अवसर।

11- हाइपोफास्फेटीमियाः

कारणः

- फास्फोरस की कमी से
- जब फास्फोरस का रक्त स्तर 2.5हध्कस से नीचे चला जाता है।

लक्षणः

- कमजोरी और थकान, हड्डियों में दर्द, मांसपेशियों में कमजोरी श्वसन में समस्या, गभीर स्थिति में लाल रक्त कणिकाओं का टूटकर मूत्र में आना।
- मूत्र का रंग गाढ़ा लाल, भूरा।

निराकरणः

- सोडा फास मुंह से, सोडिएम एसिड फास्फेट का इंजेक्शन पशु चिकित्सक द्वारा लगाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

- पशुओं की आहार संबंधी बीमारियां मुख्य रूप से असंतुलित, प्रदूषित, अधिक या कम मात्रा में दिए गए चारेसे होती हैं।
- इनका सबसे अच्छा उपचार है संतुलित, स्वच्छ व पौष्टिक आहार प्रबंधन, खनिज मिश्रण का नियमित प्रयोग तथा उचित परामर्श से आहार तैयार करना।